CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

234-2
क्र. 4004

श्री कामदस्तोत्रम्

(हिन्दीभाषानुवादसहितम्)

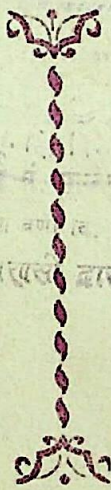

सिद्धान्ताचार्य ... शास्त्री,
निदेशक श्री ... संस्थान,
... द्वारा भेंट

इटावामण्डलान्तर्गतसलेमपुरग्रामनिवासिसुधी-
शिरोमणि श्रीपं० श्यामलालशर्मसूनुना
श्री पं० शिवदत्तशास्त्रिणाविरचितम्

मूल्यमस्यप्रेम्णाध्ययनम्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्ग संख्या सं० ४८८ प्राप्ति-संख्या २३५८

ग्रन्थ-कार्ड

श्री गणेश वर्णी दि० जैन (शोध) संस्थान

ग्रन्थागार

नरिया, वाराणसी-५

ग्रन्थ नाम श्री कामदस्तोत्रम्

लेखक पं० शिवदत्त शास्त्री

लेनेवाले का नाम	देनेकी तिथि	लेनेवालेका हस्ताक्षर	लौटानेकी तिथि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सं० ४०८
२३५८

श्री कामदस्तोत्रम्

(हिन्दीभाषानुवादसहितम्)

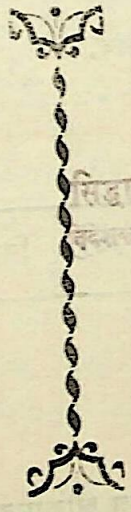

इटावामण्डलान्तर्गतसलेमपुरग्रामनिवासिसुधी-
शिरोमणि श्रीपं० श्यामलालशर्मसूनुना
श्री पं० शिवदत्तशास्त्रिणाविरचितम्
मूल्यमस्यप्रेम्णाध्ययनम्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्तोत्ररचयिता–

श्री पं० शिवदत्तशास्त्री व्या० आ० क्षा० कर्मकाण्डविशारद

स्थान—सलेमपुर

पत्रालय—अछल्दा

मण्डल—इटावा (उ० प्र०)

प्रकाशक एवं पुस्तक प्राप्ति स्थान–

सत्यनारायण गुप्त

४८/९५ पचकूचा जनरलगंज,

कानपुर (उ० प्र०)

शारदनवरात्र २०२८ सितम्बर सन् १९७१

प्रथमावत्ति में—२,०००

द्वितीयावत्ति में—२,०००

मूल्य— सप्रेमस्तोत्र श्रीकामदनाथ जी को सुनाना

मुद्रक–

एलोरा प्रिंटर्स

सूटरगंज, कानपुर।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राक्कथन

यह एक सुनिश्चित नियम है कि कठिन से कठिन कार्य, इष्ट देवता की कृपा से सरलता से पूर्ण हो जाता है। बिना किसी देवता के अनुग्रह के कोई भी कार्य पूर्ण नहीं होता है। त्रेतायुग में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रामचन्द्र जी ने रावणादिक दुष्ट दैत्यों का विनाश करने हेतु श्री भगवान् कामदगिरि की उपासना की। अतः उनके सभी मनोरथ पूर्ण हुए। उसी समय से कामदगिरि की महत्ता और भी अधिक बढ़ गई।

श्री कामदगिरि का पावन क्षेत्र जिला बाँदा के चित्रकूट तथा कर्वी स्टेशन के समीप में है। यही वह क्षेत्र है कि जहाँ भगवान् कामदनाथ जी की कृपा से महाराज नल, तथा महाराज युधिष्ठिर आदि के घोर संकट दूर हुए थे। स्पष्ट है कि—

चित्रकूटे शुभे क्षेत्रे श्रीरामपदभूषिते।
तपश्चकार विधिवद् धर्मराजो युधिष्ठरः॥

× × ×

दमयन्ती पतिर्वीरो राज्यं प्राप हताशुभः॥

श्री कामदगिरि की महिमा का वर्णन करते हुये महात्मा तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में लिखा है—

कामद गिरि भे राम प्रसादा। अवलोकत सब हरत विषादा॥

श्री कामदगिरि की महिमा के प्रभाव से ब्रह्मा, विष्णु, शंकर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीनों महाप्रभुओं को एक-साथ यहीं (चन्द्रमा, मुनि दत्तात्रेय तथा दुर्वासा के रूप में) जन्म ग्रहण करना पड़ा अनेकों भक्त गण आपत्तियों से युक्त होकर यहाँ आते हैं और श्री कामद गिरि की कृपा से संकट मुक्त हो जाते हैं। जो भी दुर्लभ मनोरथ लेकर श्री कामद गिरि की शरण में आता है। उसके सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं। रामायणादिक अनेक ग्रन्थों में व पद्मपुराण, स्कन्दपुराण, महाभारत, महाकवि कालिदास कृत मेघदूत नामक खण्डकाव्य में भी श्री कामद गिरि की महत्ता का वर्णन किया गया है। महर्षि बाल्मीकि ने कहा है:—

यावता चित्रकूटस्य नरः शृङ्गाण्यवेक्षते।
कल्याणानि समाधत्ते न मोहे कुरुते मनः॥
(वा० रा० २।५४।२०)

अर्थात मनुष्य जब तक चित्रकूट के शिखरों का अवलोकन करता है तब तक कल्याण-मार्ग पर चढ़ता है। उसका मन कभी भी अविवेक में नहीं फँसता है।

वृहद् रामायण में चित्रकूट का वर्णन अति विस्तार से किया गया है यथा—

ये कुर्वन्ति द्विजश्रेष्ठ साष्टाङ्गंश्रद्धयान्विताः।
ते पुत्रपौत्र सम्पत्तिन्धनधान्ययुताः सदा॥ १६।३५॥
प्राप्नुवन्ति नरालोके ह्यमुत्रवा पराङ्गतिम्।
सर्वेविध्नाःक्षयं यान्ति दुःखदारिद्र्यसंभवाः॥ १६।३६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

येषांशरीरे तिष्ठन्ति रजांसि द्विज सत्तम ।
तावदब्द सहस्राणि स्वर्गेलोके महीयते ॥१६।३७॥

अर्थात जो कामद जी को श्रद्धायुक्त साष्टाङ्ग दण्डवत् करते हैं। वे धन-धान्य से युक्त होकर पुत्र तथा पौत्र आदि को प्राप्त होते हैं ॥३५॥ तथा परलोक में उत्तम गति को प्राप्त होते हैं तथा दुख व दारिद्रय से उत्पन्न सभी विघ्न नष्ट हो जाते हैं ॥३६॥ जिस प्राणी के शरीर में (श्री कामद गिरि की) प्रदक्षिणा के जितने रजकण विद्यमान रहते हैं तो वह प्राणी उतने हजार वर्ष तक स्वर्ग में निवास करता है ॥३७॥

कामदनाथ, कामतानाथ, चित्रकूट, गिरिनाथ, गिरिराज आदि ये सबनाम कामदगिरि के ही हैं। इनकी परिक्रमा, दर्शन आदि का विशेष महत्व है तान्त्रिक ग्रन्थों में तथा श्रीदेवी भागवत आदि पुराणों में बताया गया है कि सती जी का स्तन या *जघनास्थि पात यहाँ होने से चित्रकूट इक्यावन पीठों में भी श्रेष्ठ पीठ कहा गया है वृहद् रामायण में भी लिखा है कि--

पीठानाम्परमं पीठम् पर्वतानाञ्च पर्वतम् ।
धर्माभिलाषबुद्धीनान्धर्मराशिकरम्परम् ॥३।११॥

---

* विष्णुचक्रेण सञ्छिन्नास्तद्दे हावयवाःपृथक् ।
निपेतुः पृथिवी पृष्ठे स्थाने-स्थाने महाभुने ॥ १ ॥
महातीर्थानितान्येव मुक्तिक्षेत्राणिभूतले ।
सिद्धपीठाहितेदेशा देवानामपिदुर्लभाः ॥ २ ॥
भूमौसम्पतितास्तेतु छायाङ्गावयवाःपृथक् ।
जग्मुःपाषाणतां सर्वे लोकानां हितहेतवे ॥ ३ ॥
(तन्त्र ग्र०)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थात पीठों में उत्तम पीठ, पर्वतों में उत्तम पर्वत, धर्म अभिलाषा में जिनकी बुद्धि है, उनको धर्म की राशि देने वाला है। उत्तम पीठ होने के कारण यह स्थान विविध प्रकार के यन्त्र तथा मन्त्र आदि साधन करने का अति श्रेष्ठ स्थान है। तथा गायत्री आदि की उपासना का तो शीघ्र फलदायक स्थान है ही। यह क्षेत्र राम, शिव इन महाप्रभुओं ने तथा सीता, पार्वती आदि इन महा शक्तियों ने सदा निरन्तर वास करने के लिये स्वीकार किया है। अब भी भक्तजनों को इनके दर्शन सदा होते रहते हैं। श्री गुरुदेव जी से विरचित श्री शिवस्तोत्र व श्री हनुमत् स्तोत्र की पुस्तक के परिशिष्ट भाग में छपे हुये भी सभी मन्त्र तथा यन्त्रादि यहां चित्रकूट में बहुत शीघ्र सिद्ध होते हैं।

वस्तुतः श्री कामदनाथ जैसा कि नाम हैं वैसा ही इनका महत्व है अर्थात मनोकामना को पूर्ण करने वाले हैं। कर्वी स्टेशन के पास में स्थित यह क्षेत्र मन्दाकिनी गङ्गा की पावन धारा से युक्त है। इस क्षेत्र में अनेकों महत्वपूर्ण दर्शनीय तीर्थ स्थान हैं यथा सीताकुण्ड, स्फटिकशिला, हनुमान्धारा, रामशैया, प्रमोदवन, सिरसा वन, अत्रिआश्रम, भरतकूप, सीता रसोई तथा गुप्तगोदावरी आदि।

श्री कामदगिरि का अनेकों बार का अनुभूत, सकल अभीष्ट प्रद, श्री कामदस्तोत्र सन् १९३४ में श्रीमान् गुरुदेव श्री पं० शिवदत्त शास्त्री व्याकरणायुर्वेदाचार्य स्थान-सलेमपुर पत्रालय-बंशी (अछल्दा) मण्डल इटावा (उ० प्र०) ने बनाया था तथा प्रथम संस्करण भी उसी समय में हुआ था। वह संस्करण एक भक्त ने पूर्ण मनोरथ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होने पर निःशुल्क वितरित करवाया था। जन कल्याणार्थ वितरित होने से तथा अनेकों लोगों के कठिन से कठिन कार्य सिद्ध हुए। अतः प्रथम संस्करण शीघ्र ही समाप्त हो गया।

आज पुनः अन्यान्य भक्त जनों की याचना विशेष करने पर यह द्वितीय संस्करण एक लघु पुस्तिका के रूप में आप लोगों के कर कमलों में समर्पित है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप लोग इस स्तोत्र द्वारा मनोऽभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर स्तोत्र रचयिता एवम् प्रकाशक के परिश्रम को सफल बनावेंगे। तथा मानव सुलभ त्रुटियों की सूचना देंगे कि जिससे अगले संस्करण में उनका संशोधन किया जा सके।

भवदीय

सत्यनारायण गुप्त

प्रकाशक

सं० ४०८
२३५८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ श्री मद्गुरवेनमः ॥

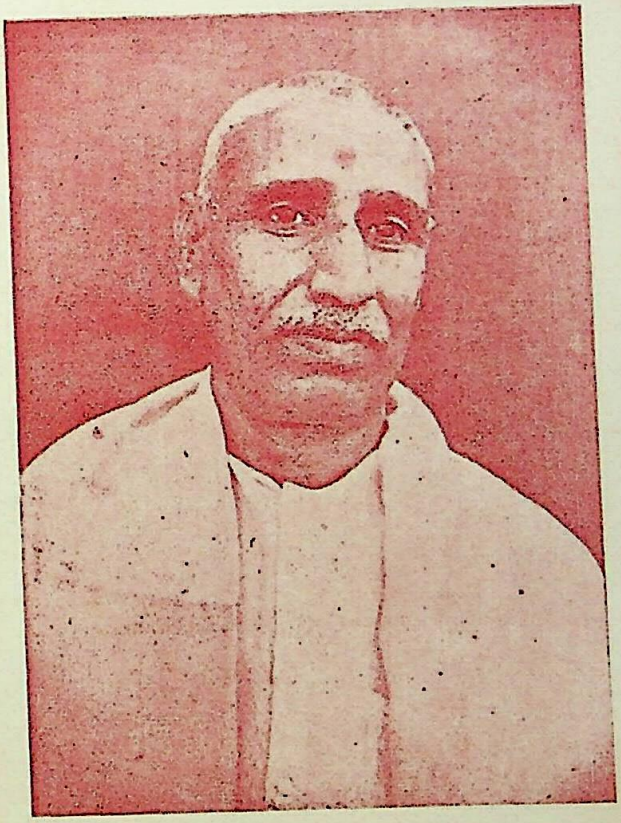

श्री शिवस्तोत्र व श्री हनुमत्स्तोत्र आदि अनेक स्तोत्रों के रचयिता-ग्रन्थलेखक-प्रवक्ता-ज्योतिष-व्याकरण-तन्त्र-साहित्य-धर्मशास्त्र आदि के सुयोग्य विद्वान्-परमपूज्य गुरुदेव श्रद्धेय-प्रातःस्मरणीय श्री १०८ श्रीमान् पं० शिवदत्त जी शास्त्री ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

। श्रीकामदगिरयेनमः ।

हे कामदेश ! शुभकामद ! कामरूप !–
सत्यस्वरूप ! हृतभक्तभवान्धकूप ! ।
हे चित्रकूट ! धरणीधर ! शैलभूप !–
व्याधीन्निवारय सदा प्रियरामरूप ! ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

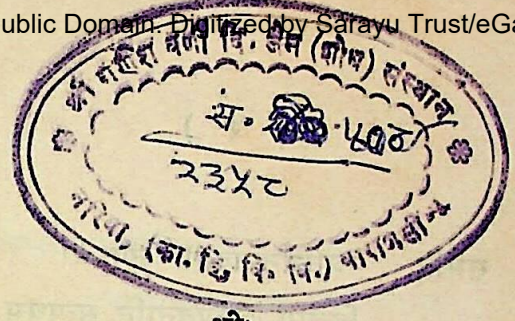

श्रीः

श्री कामदस्तोत्रम्

गणाधिपन्नमस्कृत्य विभुं विद्यानिधिङ्गुरुम् ।
सर्वार्थ सिद्धये कुर्वे कामदस्तोत्रमुत्तमम् ॥

श्लोक–

अजादिदेवाः सचराचराइमे,
सताचवेदाः किलयेन कल्पिताः ।
स्वशक्तिभिर्भेदमनाश्रिताः परात्,
प्रपन्नपालम् प्रणतोऽस्मि कामदम् ॥१॥

अर्थ–जिन कामदनाथ जी ने अपनी शक्तियों से ब्रह्मा आदि देवता और स्थावर जंगम सहित स्वर्गादि लोक और वेद बनाये जो परमेश्वर से भिन्न नहीं है । शरणागत की रक्षा करने वाले उन कामदनाथ जी को हम नमस्कार करते हैं ॥ १ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्लोक–

समंहि पन्नास्थनृपादयो नृपा–
विधाय देवायतनानि सत्पथम् ।
समन्ततोऽनेकतपस्यतो मुनीन्–
समासयामासुरमीषुवृत्तिभिः ॥२॥

अर्थ–जिन कामदनाथ जी के चारों तरफ पन्ना के राजा आदि राजाओं ने मंदिर और सुन्दर परिक्रमा बनवाया और जिन मंदिरों में अनेक तप करने वाले मुनियों को जीविका के साथ निवास करवाया है ॥ २ ॥

श्लोक–

विराजमानम् परितो नगालिभिर्वयो,
विरावैश्च मनोहराङ्घ्रिपैः ।
सुनिर्झरालीफलपुष्पवल्कलै
र्मनोहरं योगजुषान्तपिस्वनाम् ॥३॥

अर्थ–जो कामदनाथ जी चारों तरफ पहाड़ों की पंक्तियों से और मनोहर पक्षियों के शब्दों से और मनोहर पेड़ों से शोभित हैं । सुन्दर झरनों की पंक्तियों और फल फूल बल्कलों से योगी और तपस्वियों के मन को हरते हैं ॥ ३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्लोक–

अनन्यभक्तास्तुनिरुध्य सर्वतो,
विभावयन्तस्तव मङ्गलायनम् ।
मनः स्वरूपं हृदि योगिभावितञ्जनाः
श्रयन्ते नहि काम सञ्चयान् ।।४।।

अर्थ–हे कामदनाथ जी आप के अनन्य भक्त तो सभी संसार विषयों से मन को हटाकर सम्पूर्ण मंगलों का स्थान योगियों से हृदय में ध्यान किये गये आप के स्वरूप का ध्यान करते हुये स्वर्ग आदि के सुख को नहीं चाहते हैं ।। ४ ।।

श्लोक–

स्थिता नगाः स्थावरभावमात्मनो–
विहातुमीशम् परिवार्य सर्वतः ।
खगामृगाश्चापि कुयोनिसंभवं
विहातुमीशञ्चलु दुःखमाश्रिताः ।।५।।

अर्थ–पहाड़ और पेड़ अपनी योनि को छुड़ाने के लिये कामदनाथ जी को चारों तरफ से घेरे हुये प्रार्थना करते हैं और पक्षी हिरण सिंह बाघ आदि भी अपनी खराब योनि के दुःख को छुड़ाने के लिये चारों तरफ रहकर सेवा करते हैं ।। ५ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्लोक–

मनोहरैः सानुभिरम्बुदाश्रयैः–
सुदुःखितानम्बरभेदिभिर्नरान् ।
समाह्वयन्तङ् खलु कार्य सिद्धये–
विदूरतः कामदमाश्रयेगिरिम् ।।६।।

अर्थ–मेघों के आश्रयभूत आकाश को भेदन करने वाले मनोहर शिखरों से दुःखी मनुष्यों को उनकी कार्य की सिद्धि के लिये दूर से बुलाने वाले श्री कामदनाथ गिरि की हम शरण में हैं ।। ६ ।।

श्लोक–

शरीरिणः संसृतिचक्रशातन
न्नृभिः सदाध्यात्मिकयोगगम्यम् ।
कदिन्द्रियाणामनवाप्यदर्शनम्
प्रपन्नपालम् प्रणतोऽस्मि कामदम् ।।७।।

अर्थ–जीव के संसार चक्र को छुड़ाने वाले मनुष्यों से आत्म ज्ञान द्वारा जानने योग्य अत्यन्त दुर्लभ दर्शन वाले शरण में आने वाले का पालन करने वाले श्री कामदनाथ जी को हम नमस्कार करते हैं ।। ७ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्लोक–

लोकानवेक्ष्य कलिनाशितबुद्धिभावान्–
देवो विचार्य कुधियामपिकामसिद्धिम् ।
योगीश्वराधिगमरूपमनन्तवीर्यो–
हित्वादयालु रभृतार्चित शैलरूपम् ॥८॥

अर्थ–अनन्त शक्ति वाले दयालु परमेश्वर ने, कलियुग से नष्ट बुद्धि वाले मनुष्यों को देखकर विषयासक्त भी उन लोगों की कार्यसिद्धि विचारकर योगीश्वरों के साक्षात्कार करने योग्य रूप को छोड़कर मनोहर पर्वत का रूप धारण किया ॥ ८ ॥

श्लोक–

मन्दाकिनी सुरधुनी परया च भक्त्या–
संसेवतेऽखिलगुरुं श्रुतिवेद्यरूपम् ।
ब्रह्मादिलोकपसमर्चितपादपद्म,
न्तं कामदङ्गिरिवरं शरणं प्रपद्ये ॥९॥

अर्थ–मन्दाकिनी गंगा परम भक्ति से जिनका सेवन करती हैं संसार के गुरु वेद जिनके स्वरूप को बताते हैं ब्रह्मादिलोकपाल जिनके चरण कमल की पूजा करते हैं उन श्री कामदनाथ जी की हम शरण में हैं ॥ ९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्लोक–

पित्राज्ञया वनमुपेत्य पुराससीतोऽ–
सेविष्ट कामदवरं सह लक्ष्मणेन ।
रामोऽपियेन महिमानमवापदेश–
स्तं कामदङ् गिरिवरं शरणं प्रपद्ये ।।१०।।

अर्थ–त्रेतायुग में पिता की आज्ञा से सीता और लक्ष्मण के साथ बन में आकर श्री रामचन्द्र जी ने अभीष्ट वर देने वाले जिन कामदनाथ जी की सेवा की जिनके यहाँ रहने से चित्रकूट नाम से देश की प्रसिद्धी हुई उन श्री कामदनाथ जी की शरण में हम प्राप्त हैं ।। १० ।।

श्लोक–

रामाय पुष्पफलवस्तुचयान् प्रदाय–
देवो दुरापममरैश्चनिवासमग्र्यम् ।
लोके ततानखलु कामदमात्मनाम–
तं कामदङ् गिरि वरं शरणं प्रप द्ये ।।११।।

अर्थ–जो कामद जी रामचन्द्र जी को फूल फल और वल्कल आदि वस्तु समूह तथा देवताओं को भी दुर्लभ रहने का स्थान देकर संसार में अपना नाम कामद प्रकट करते हुये उनदी हम शरण में प्राप्त हैं ।। ११ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्लोक

धर्मार्थकामनिचयानुत नाकमीशो–
भक्तायराति महताङ्गतिराशुमोक्षम्,
आराधिताःखलु चिरम्परयाच भक्त्या–
देवाःप्रसद्य भजते ददतीह कामान् ॥१२॥

अर्थ–सज्जनों को सुन्दर फल देने वाले, जीवों का कल्याण करने वाले कामदनाथ जी धर्म अर्थ काम स्वर्ग और मोक्ष को भी शीघ्र देते हैं बहुत समय तक सेवा करने से प्रसन्न देवता तो भजन करने वाले को इस लोक के ही पदार्थ देते हैं ॥ १२ ॥

श्लोक

देशान्तरस्थमनुजाःखलु कामदाख्यां–
श्रुत्वासमेत्य सततम् परितोव्रजन्ति ।
लब्ध्वामनोरथफलं यत आशुयन्ति–
मोदंश्रये शरणदङ्किल कामदन्तम् ॥१३॥

अर्थ–दूसरे देश में रहने वाले मनुष्य कामद इस नाम को सुनकर आकर परिक्रमा देते हैं । और शीघ्र ही जिनसे मनोरथ का फल पाकर आनन्द को पाते हैं, आश्रय देने वाले श्री कामद नाथ जी की शरण में हम प्राप्त हैं ॥ १३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्लोक

यावज्जनोनभजते खलुयोगिवृन्दैः,
श्रीकामदं हृदिविचिन्त्यमगाधवोधैः ।
योगीन्द्रवृन्दसुरसेवितचारुकूट–
न्तावत्सयातिकिल संसृतिचक्रदुःखम् ॥१४॥

अर्थ–जब तक मनुष्य अनन्त ज्ञान वाले योगियों से हृदय में विचारे गये, योगिजन विद्याधर किन्नर आदि देव गण जिनके मनोहर शिखरों का सेवन करते हैं ऐसे श्री कामदनाथजी का भजन नहीं करता है तब तक संसार चक्र का दुःख नहीं छूटता है ॥ १४ ॥

श्लोक

अत्रस्थिताहिपुरुषाःखलुभूरिभाग्या–
येऽप्याश्रयन्तिपशुपक्षिनगादयश्च ।
भूताधिवासमनिशञ्जगदादिहेतुं,
श्रीकामदङ्गिरिवरम् शरणं प्रपद्ये ॥१५॥

अर्थ–इस देश में रहने वाले मनुष्य पशु पक्षी पहाड़ वृक्ष आदि सभी बड़े भाग्य वाले हैं जो प्राणियों के अन्तर्यामी संसार के आदि कारणकामदनाथजी का निरन्तर सेवन करते हैं उन श्री कामदनाथ जी की शरण में हम प्राप्त हैं ॥ १५ ॥

श्लोक

योविश्वरक्षणपरोऽखिलरूपधारी–
पापात्मनान्निखिलपापचयापहारी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वर्गापवर्गगतिदोऽखिलतापहारी–
श्रीकामदोऽवतु जनम् भवतापतप्तम् ॥१६॥

अर्थ–जो संसार की सेवा में तत्पर अनेक रूप धारण करने वाले पापी मनुष्यों के पाप-समुदाय को हरण करने वाले समस्त ताप हरनें वाले वह कामदनाथजी संसार के ताप से तपे हुये जन की रक्षा करें ॥ १६ ॥

श्लोक

गायन्ति वेदकुशलास्तववेदवाण्या–
लीलाम् प्रभोः सकल मङ्गलमञ्जुमूर्तेः ।
नित्यं स्तुवन्ति जगदाधिविनाशिनन्त्वाम्,
श्रीकामदोऽवतु जनम्भवतापतप्तम् ॥१७॥

अर्थ–वेद के जानने वाले वेद की वाणी से समस्त मङ्गलमय सुन्दर मूर्तिवाले आप की लीला को गाते हैं तथा जगत् के दुःख के नाशक आप की स्तुति करते हैं वह आप संसार के ताप से तपे हुये जन की रक्षा करें ॥ १७ ॥

श्लोक

नानासुगन्धिकुसुमावलिभूषिताङ्गो–
नानामनोरमविहङ्गमगीयमानः ।
लोकेक्षणोत्सवकराधिकरम्यमूर्तिस्,
तस्मैनमोभगवतेऽखिलकामदाय ॥१८॥

अर्थ–नाना प्रकार के सुगन्धित पुष्पों से शोभित शरीर वाले

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनेक प्रकार के पक्षियों से गाये जाने वाले मनुष्यों के देखने में उत्सव करने वाली अत्यन्त सुन्दर है मूर्ति जिनकी, उन सम्पूर्ण शक्तियों के धारण करने वाले श्री कामदनाथजी को हम नमस्कार करते हैं ॥ १८ ॥

श्लोक

ब्रह्मादियोगिमुनिवृन्दकवीन्द्रविज्ञा–
अन्ये च ये सुरगणा न हि शक्नुवन्ति ।
वक्तुम् परेश सकलार्तिविनाशलीला–
न्तं कामदङ् गिरिवरं शरणम् प्रपद्ये ॥१९॥

अर्थ–ब्रह्मादि विष्णु महादेव और योगीन्वरों के गण मुनिगण कवीश्वर पंडित और अवशिष्ट देवगण जिन सम्पूर्ण आपत्ति के नाशकरने वाले श्रीकामदनाथजी की लीला को नहीं कह सकते हैं उन श्रीकामदनाथजी की शरण में हम प्राप्त हैं ॥ १९ ॥

श्लोक

तापत्रयाग्निपरिदग्धनिषिद्धकृत्य–
म्मोहान्धकूपपतितार्तिसमाकुलम् माम् ।
रागादिदोषचयपूर्णकलेवरञ्च,
श्रीकामदोऽवतुजनम्भवतापतप्तम् ॥२०॥

अर्थ–तीन प्रकार के ताप रूपी अग्नि से जलने के कारण निषिद्ध कृत्य वाले मोह रूपी अन्धकूप में गिरने के कारण आपत्तियों से युक्त राग आदि अनेक दोषों से पूर्ण शरीर वाले जन की श्री कामद नाथ जी रक्षा करें ॥ २० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्लोक

हे विश्वमोचन ! सनातनपुण्यमूर्ते !
हे नित्यनिर्गुणपुरातनचारुकीर्ते !
हे भूतिभूषणशिवेशमुनीन्द्रगुह्य !
हे दीननाथ ! कृपयावतु मामनाथम् ॥२१॥

अर्थ–हे संसार से मुक्ति देने वाले, हे पुण्यमूर्ति, हे नित्य, हे निर्गुण, हे पुरातन, हे सुन्दर कीर्ति वाले, हे भूतिभूषण, हे शिवेश, हे मुनीश्वरो से जानने योग्य, हे दीननाथ, अनाथ जो में हूँ उसको रक्षा करियै ॥२१॥

श्लोक

हे वाक्पते ! वरद ! हे च सुखाम्बुराशे !
वेदान्तवेद्यपुरुषोत्तमतीर्थनाथ ।
हे नारदादिमुनिवन्दितपादपद्म !–
संरक्षदीनपुरुषम् पतितम् भवाब्धौ ॥२२॥

अर्थ–हे वागीश, हे वरद, हे सुखाम्बुराशि, हे वेदान्त से जानने योग्य, हे पुरुषोत्तम, हे तीर्थनाथ, हे नारद आदि मुनीश्वरों से वन्दित चरण कमल संसार सागर में पतित दीन जन की रक्षा कीजिये ॥२२॥

श्लोक

हे यज्ञपालक ! दयार्णव ! निष्कलङ्क !
कैवल्यनाथममनाथभवाब्धिपोत !
हे विश्वमङ्गलगुणार्णव ! विश्ववैद्य !
संसारभीषणभुजङ्गमुखाद्धि रक्ष ॥२३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ–हे यज्ञपालक, हे दयासागर, हे निष्कलंक, हे मोक्षनाथ, हे मम नाथ, संसार सागर के जहाज, हे विश्वमंगल, हे गुणांसागर, हे विश्ववंद्य, संसार रूपी भयंकर सर्प के मुख से मेरी रक्षा कीजिये ॥२३॥

श्लोक

हे सर्वदुःखहरमुक्तिदहेनिरीह !–
हे भक्तरञ्जननिराश्रयनिष्प्रपञ्च !
हे विश्वतापहर ! कामदकामरूप !–
दोषालयेकुरुजने च दयार्द्रदृष्टिम् ॥२४॥

अर्थ–हे समस्त दुःखों को दूर करने वाले, हे मुक्ति देने वाले हे इच्छारहित, हे भक्तरञ्जन, हे निराश्रय, हे प्रपंचहीन, हे विश्व के तापों को हरने वाले, हे कामद, हे कामरूप, दोषों से युक्त जन में दयार्द्र दृष्टि कीजिये ॥२४॥

श्लोक

हे भक्तवत्सलभवौषधयोगगम्य !–
सर्वज्ञविश्वभवनस्थितिनाशहेतो !
हे भूमिभारहरहे ! कमनीयकान्ते !–
मामुद्धरस्वभगवञ्जगदन्धकूपात् ॥२५॥

अर्थ–हे भक्तवत्सल, हे संसार के औषधि, हे योगगम्य हे सर्वज्ञ, हे संसार के उत्पत्ति रक्षा और नाश के कारण, हे भूमि के भार को हरने वाले, हे सुन्दर कान्ति बाले, हे भगवन्, संसार रूपी अन्धकूप से मुझे निकालिये ॥२५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्लोक

हे द्वैतहीन ! निगमागमनूयमान !–
भद्रावतार ! नरकार्तिहरार्तवन्धो !
हे मङ्गलायतन ! हेऽसुरकालरूप !
भक्तिम्प्रयच्छनिजपाद सरोरुहस्य ।।२६।।

अर्थ–हे द्वैत से रहित, हे शास्त्र और वेदों से स्तुति किये जाने वाले, हे भद्रावतार, नरक की आपत्तियों से दूर करने वाले हे दीनबन्धु, हे मंगल के स्थान, हे असुरों के कालरूप, अपने चरण कमलों की भक्ति दीजिये ।।२६।।

श्लोक

लोकेश ! लोकभयसूदन ! हे दयेश !
हे विश्वनाथ ! परमेश्वर हे ! महेश !
हे दुष्टदानवनिकन्दन ! हे सुरेश !
वैकुण्ठवास ! धरणीधर ! हे रमेश ।।२७।।

अर्थ–हे लोकनाथ, हे लोकभयनाशक, हे दयानिधि, हे विश्वनाथ, हे परमेश्वर, हे महेश, हे दुष्ट दानवों के नाश करने वाले, हे सुरेश, हे वैकुण्ठवास, हे धरणीधर, हे रमेश ।।२७।।

श्लोक

हे पापसिन्धुमथनोचितमन्दराद्रे !
हे दीनभीतिहर ! हेऽखिलकाममूर्ते !
मोहादिलोभजडतादिविनष्टबुद्धि !
म्मामां जहाहि नु कदापि च पापमूर्तिम् ।२८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ–हे पाप रूपी समुद्र के मथन में मन्दराचल के समान, हे दीन जनों की आपत्ति हरने वाले, हे समस्त मनोरथ पूर्ण करने वाले मोहादि तथा लोभ जड़ता आदि से नष्ट बुद्धि समस्त पाप की मूर्ति मुझे न त्यागिये ॥२८॥

श्लोक

पठेदिमाङ्कामदसुस्तुतिम्परां,
विनिर्मितां श्रीशिवदत्तशर्मणा ।
लभेत भक्तिङ्किलकामदे विभौ,
प्रयाणकाले च पराङ्गतिं पुमान् ॥

इटावा मण्डलान्तर्गतसलेमपुरग्रामवासिविद्वत्सार्वभौमत्रिपाठि श्री पं० श्यामलालशर्मसूनुना श्री पं० शिवदत्त शर्मणा विरचितं श्रीकामदस्तोत्रं समाप्तम् ।

अर्थ–श्री शिवदत्त शर्मा से बनाई हुई इस कामदनाथजी की स्तुति को जो मनुष्य पढ़ेगा उसकी व्यापक श्री कामदजी में भक्ति होगी और शरीर छूटने पर मोक्ष प्राप्त करेगा ।

इति शिबदत्तशास्त्री सेविरचितश्रीकामदस्तोत्रका हिन्दी भाषानुवाद समाप्त

इति श्री :

सं. ४४८
२३५८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

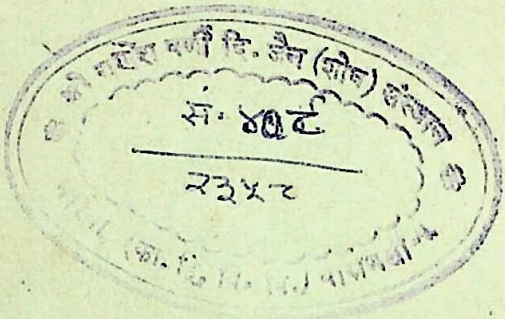

मुद्रक :–एलोरा प्रिंटर्स सूटरगंज, कानपुर ।
फोन नं० ५२२२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi